1956 में बनी फ्रेंच फिल्म द रेड बलून आज दुनिया की एक महान क्लासिक है। फिल्म को ढेरों पुरस्कार मिले हैं जिसमें सर्वश्रेष्ठ स्क्रीनप्ले के लिए ऑस्कर भी शामिल है। 34 मिनट की इस फिल्म में बहुत ही कम संवाद हैं।

लाल गुब्बारा

अनुराग वत्स

फिल्म एक छोटे लड़के पास्कल के बारे में है। पास्कल बहुत अकेला है और वो अक्सर घर में भटके-खोए जानवर लाता है। उसकी दादी को यह "कचरा" बिलकुल नहीं सुहाता है। एक दिन पास्कल को एक लाल गुब्बारा मिलता है। धीरे-धीरे गुब्बारा पास्कल का दोस्त बन जाता है। लेकिन कुछ शरारती बच्चे एक दिन गुब्बारे को फोड़ देते हैं। अचानक पेरिस के सभी गुब्बारे इसके विद्रोह में एक-साथ आसमान में उड़ते हैं। सारे गुब्बारे अपनी डोरियाँ आपस में बाँध लेते हैं और पास्कल को आसमान में ऊपर उठा ले जाते हैं।

फिल्म को ऍल्बर्ट लेमोरिस ने बनाया है। पास्कल की भूमिका ऍल्बर्ट लेमोरिस के बेटे पास्कल ने निभाई है। और छोटी लड़की की भूमिका उनकी बेटी सबीन ने अदा की है। रेड बलून फिल्म बनने के बाद इसी नाम से एक बेहद सुन्दर किताब भी छपी। किताब में फिल्म के चालीस सुन्दर चित्र छपे हैं। इसका हिन्दी अनुवाद भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने छापा है।

— अरविन्द गुप्ता

एक हैं छोटे। पास्कल नाम है इनका। पेरिस में रहते हैं। अपनी दादी के साथ। प्यारे और भले-भले से। कद-काठी से ऐसे कि गोद में भर लेने का जी करे। छोटे हैं, लेकिन इतने भी नहीं कि खुद से स्कूल भी न जा सकें। तो छोटे, रोज़ की तरह उस दिन भी स्कूल चले। घर की बगलवाली गली में दाखिल होते ही देखते क्या हैं कि एक लाल गुब्बारा लैंप-पोस्ट से अटका पड़ा है। छोटे को लगा मानो वह उन्हीं की राह देख रहा है। वे बिना एक पल गँवाए लैंप-पोस्ट पर चढ़कर गुब्बारे को उसके साथ लगे फुँदने से पकड़ लेते हैं। लाल गुब्बारा भी छोटे के साथ कुछ ही देर में हिल-मिल जाता है और छोटे उसे लिए स्कूल की राह पकड़ते हैं।

पर, छोटे को गुब्बारे सहित बस में सफर करने की इजाज़त नहीं मिली। उदास छोटे गुब्बारा छोड़ने की बजाए बस छोड़ देते हैं और पेरिस की गलियों में अपने नए दोस्त के साथ फुदकते हुए स्कूल पहुँचते हैं। वहाँ गुब्बारे को सफाई करनेवाले के ज़िम्मे सौंपकर अपनी क्लास में जाते हैं। इधर गुब्बारे को छोटे से बड़े लोग कैम्पस से बाहर करने में लग जाते हैं। घबराया गुब्बारा जब छोटे के पास पहुँचता है तो गुस्सैल मास्टरजी छोटे को इसकी सज़ा के तौर पर एक अलग कमरे में बन्द कर देते हैं। अपने दोस्त के साथ हुई इस बेइंसाफी को गुब्बारा बर्दाश्त नहीं कर पाता है। वह मास्टरजी को शहर भर में तंग करता है। मास्टरजी चाह कर भी गुब्बारे का रंग नहीं बिगाड़ पाते हैं।

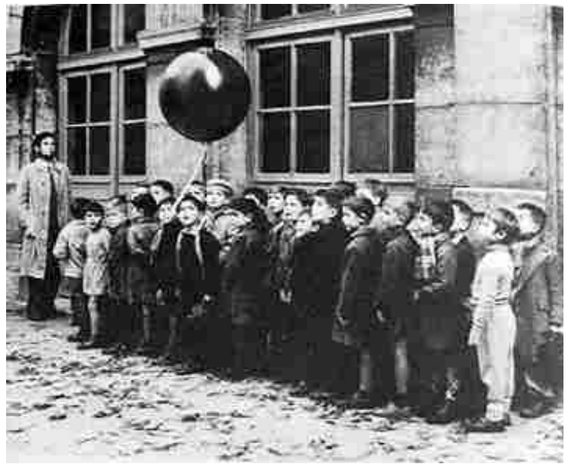

अब छोटे घर में हैं। दादी गुब्बारे को फालतू की चीज़ समझकर बालकनी से बाहर कर देती हैं। छोटे फिर उदास। दादी की नज़र बचाकर बालकनी में आते हैं। यहाँ लाल गुब्बारा बेसब्री से उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। छोटे उससे मीठी अरज करते हैं, "बलून, यू मस्ट ओबे मी, एंड बी गुड।" (गुब्बारे, मेरा कहा मानो, और ठीक से रहो।) गुब्बारा छोटे का कहा मानकर बाहर रहता है। घर में भी और स्कूल में भी। छोटे कभी-कभी उसे आँख बचाकर अपने पास ले आते हैं। बस में भी छोटे को अब गुब्बारे का फुँदना नहीं पकड़े रहना पड़ता। बस के साथ-साथ गुब्बारा भी सफर करता है। शहर में जहाँ-जहाँ छोटे जाते हैं, गुब्बारा परछाई बना फिरता है। कभी-कभी दोनों एक-दूसरे से छुपम-छुपाई भी खेलते हैं। छोटे उसे आँधी-पानी से बचाए रखते हैं। गुब्बारा छोटे को दिन भर हँसाते-खेलाते रहता है।

लेकिन छोटे के कुछ हमजोलियों को उनका लाल गुब्बारा चुभता है। वे एक दिन गुब्बारे को घेर लेते हैं। छोटे को दहशत होती है। लड़कों में जो बड़ी उमर के हैं, उनके हाथों में गुलेल है। वे गुब्बारे पर निशाना साधते हैं। गुब्बारा कलाबाज़ियाँ खाते हुए खुद को बचाता है। छोटे उसे बचाने के लिए गुब्बारे को लिए-लिए तमाम गलियों में हिरन की चाल से घुसते जाते हैं। पर, गुब्बारे की जान के पीछे पड़े बच्चों का हुजूम आखिरकार छोटे और गुब्बारे को इस दौड़ में परास्त कर देता है। गुब्बारे का अन्त निकट देख छोटे रुँधे गले से गुब्बारे से कहते हैं, "बलून, फ्लाई अवे फ्रॉम हियर।" (गुब्बारे, कहीं दूर उड़ जाओ।)

पर, इस दफा गुब्बारा छोटे का कहा नहीं मानता। छोटे को बच्चे गुब्बारे के लिए नोचते हैं। उनमें से एक सयाना जब उनसे पार नहीं पाता तो गुलेल से गुब्बारे में सुराख कर देता है। गुब्बारा फट जाता है। इसी के साथ छोटे के भीतर भी कुछ फटता है, जो उनकी नन्हीं आँखों की राह पकड़ उनके चेहरे पर फैल जाता है!

छोटे जिस मद्धिम स्वर में अपने लाल गुब्बारे के लिए बिलखते हैं, उससे कहीं तेज़ी से उस दिन पेरिस शहर के तमाम गुब्बारे अपनी जगह से उड़कर छोटे तक आते हैं और उन्हें अपनी गोद में भर गुब्बारों के देश ले जाते हैं – जहाँ कोई मानवीय क्रूरता नहीं पहुँचती।

बच्चों की मासूम दुनिया को सेल्युलाइड पर इतनी मार्मिकता से फिल्माने के कारण *द रेड बलून* आज भी मील का पत्थर मानी जाती है।

चित्रः इंटरनेट से साभार